भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 1 | शुक्रवार, 26.1.1996 | वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मवाद

साधु का ज्ञान

तत्व से स्वामिश्रीजी के स्वरूपों का ज्ञान प्राप्त हो तब ही आत्यंतिक मुक्ति को पा सकते हैं-यूं श्रीजी महाराज ने भारपूर्वक बताया है। सबसे परे अक्षर है और वे मूर्तिमान हैं तथा उससे पर पुरुषोत्तम हैं। यूं पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, महत्तत्व, प्रधान पुरुष, प्रकृति और अक्षर से पर ऐसे परात्पर श्रीजी महाराज की अपरम्पार महिमा समझने, धारने और अखंडित करने साधु के ज्ञान की अनिवार्यता गिनी जाती है। वच. प्रथम 63 या लोया 7-11, का. 1-7 वगैरह के मुताबिक तत्व से प्रत्यक्ष स्वरूप के प्रति सर्वोपरि भाव जब दृढ़ हो, तब ही प्रकृति के भाव टलकर आत्यंतिक प्रलय सिद्ध होता है। महाराज ने मध्य 30, अमदावाद-2 वगैरह में यह प्रतिपादन किया है। वड़वानल अग्नि के समान सच्चे संतवर्य वरताल 19 के मुताबिक इस भरतखंड में जरुर विचरण करते होते हैं ही, ऐसा महाराज का वचन है। ऐसे संत को पहचान कर प्रकृति पुरुष, शक्ति और संकल्प से पर का प्रथम 24 के मुताबिक का ज्ञान प्राप्त कर लेना-तो ही धाम का सुख देह रहते ही अनुभव होगा और मूर्ति सिद्ध होगी।

ऐसे प्रगट संत फिलहाल पूज्यपाद श्री योगीजी महाराज हैं जिनमें निष्कुलानंदस्वामी ने जो वर्णन किया है, वे संत के सभी लक्षण दिखाई देते हैं और वरताल 10 एवं प्र.27 के मुताबिक ऐसे संत में श्रीजी अखंड रहे हैं तथा अनंत ब्रह्माडों के कार्यभार उनके इशारे श्रीजी चलाते हुए दिखाई पड़ते हैं। सो, ऐसे सत्पुरुष में असाधारण प्रीति या असाधारण सेवा-मन-कर्म-वचन से कर लेनी, जिससे साधु का सच्चा ज्ञान प्राप्त हो और अहंता, ममता के भाव टलकर देह रहते ही इयल की भ्रमरी बन जाए। योगमूर्ति गोपालानंदस्वामी ने 40 साधुओं को स्वरुपज्ञान दिया तब केवल छः मुक्त दशा को पाए और उनमें से केवल तीन साधु के ज्ञान को पाए। सो, महाराज को जैसे हैं वैसे पहचानने के लिए निष्कामी, निर्मानी संतवर्य को पकड़ने ही पड़ेंगे और ऐसे संत द्वारा ही निर्वासनीक हो सकेंगे। और तब जाकर देह के रहते ही ब्रह्मरूप होकर भगवान में जुड़ पायेंगे। सभी मुमुक्षुओं को यह प्राप्त कर लेना चाहिए।

साधु का ज्ञान हो तो धाम, धामी और मुक्त ही सत्य माने जाएं और प्रकृतिपुरुष के कार्य में मनसहित माल ही नहीं माना जाए। देह में रहते हुए ही माया से पर वर्ता जाए तथा दोष टलकर, अंतर में अखंड शांति वर्ते। इससे भी अधिक प्रत्यक्ष कल्याणकारी तत्व जहां प्रगट हो वैसे संत की मर्जी के मुताबिक ही वर्ता जाए तथा अखंड गुरुमुखी बनकर, संकल्परहित होकर, निर्मानीपन से, समग्र सत्संग को दिव्य समझ कर सेवा हुआ करती है। ऐसे सच्चे सेवक कई तैयार हुए हैं, वे सभी प.पू. शास्त्रीजी महाराज का ही प्रताप है तथा साधु का ज्ञान पू. योगीजी

महाराज दे रहे हैं। फलस्वरुप निर्दोषबुद्धि दृढ़ होकर, एकांतिकभाव सरलता से सिद्ध होता जाता है और संप सुहृद्भाव व एकता बढ़ती हुई दिखाई देती है। सो पू. योगीजी महाराज की मर्जी, रूचि और अभिप्राय के मुताबिक ही चलना व महाराज की आज्ञा में रहकर सेवा करनी जिससे गुण से परे का साधु का गुणातीत ज्ञान देह रहते ही सिद्ध हो जाएगा।

प.पू. काकाजी महाराज-जून, जुलाई-1956

✡✡✡✡✡

ऐतिहासिक साात्कार दिन.... 3 फरवरी, 1952

प्रथम दर्शन में ही हम सभी के हृदय सिंहासन पर अधिकार करके दिव्य सुख, शांति, आनंद का अलौकिक सुख देने वाली परम कल्याणकारी दिव्य विभूति प.पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन-3 फरवरी का महामंगलकारी दिन.....

गुरुहरि योगीजी महाराज का दृढ़ संकल्प था कि पृथ्वी पर ब्रह्मभाव में रहते समाज का सर्जन करना....इस संकल्प को साकार करने पू.काकाजी जैसे शूरवीर पात्र को चुना.....1952 की उसी क्षण से पू. काकाजी सैकण्ड-सैकण्ड योगीमय बनकर गुणातीत समाज के संबंध वालों के लिए पराभक्तिरूप ही जिए...संबंध देखकर मिट जाना-यूं वर्तने का ज्ञान गुणातीत समाज में सर्वप्रथम पू. काकाजी ने ही शुरू किया। अपने जीवन व वर्तन से सभी संबंध वालों के साथ दिव्यभाव, सुहृदभाव, दासभाव, अहोभाव से जीना समझाया और प्रभु के भाव सेसब की सेवा वही परम की पराभक्ति बताई। इस परम सत्य का साक्षात्कार भी हर एक को उन्होंने ही कराया। अखंड दिव्यभाव में ही वर्तकर खुद के सर्वस्व का सम्पूर्ण याहोम किया।

पू. काकाजी को गुरूहरि योगीजी महाराज की योजना का सम्यक दर्शन था....वे खुद भी पू. बापा की मर्जी के मुताबिक सैकण्ड-सैकण्ड जिए और हमारे लिए भी उसी रास्ते पर निरन्तर टार्च लाईट फैंकते ही रहे। पर, हम अपने मन, इंद्रियों-अंतःकरण की गली-गलियारों में, महत्वकांक्षाओं के पूर में, मान्यताओं में मेरा-तेरा, यह बड़ा-यह छोटा, यह पूर्ण-यह अपूर्ण.....इसने ऐसा किया-इसने वैसा किया.....फलां ऐसा-फलां वैसा वगैरह की झंझटों में ही रहकर उन्हें नजर अन्दाज करते रहे, लापरवाह रहे। अरे ! अपनी गल्तियों को सुधारने की बजाय उल्टा उन्हें ही नापते रहे। उनसे लुका-छिपी खेलते रहे-अपनी गल्तियों को ढकने की लीपापोती करते रहे। पर फिर भी वह अर्निदेश का शाही सौदागर-शाही फकीर बनकर हमारे पीछे निरंतर लगा ही रहा.....लगा ही रहा.....

1977 में पू.गुरुजी को विदेश से लिखा प.पू. काकाजी का एक पत्र प.पू. काकाजी की हम सबसे रखी चाहना स्पष्ट करता है कि वे असल में हम से क्या कराना चाहते थे..... उनकी क्या अपेक्षा थी? और हम उनके मुताबिक कितना जी रहे हैं?

यूरोप-फ्रांस, जर्मनी 15.7.77

''.....साधकों को जैसे-जैसे सिद्धि प्राप्त होती जाए, वैसे-वैसे सच्चे सद्गुरु-स्वतंत्र कसौटीयों में से-अग्निपरीक्षा में से गुज़ारते ही हैं। प्रभु की ही वह कृपा है। हाँ, वह जरूरी ही है यूं मानने का कारण नहीं है। परन्तु उसमें से गुजरना तो पड़ता है। समझदार व स्वरूपकृपा वाले को केवल आभास रूप आकर वह चली जाती है। मुझे तो पू. बापा ने अपनी अनुपम पसंदगी में गिना। सो सर्वांगी विकास में और सर्वोपरि ब्राह्मीस्थिति में मुश्किलें बाधारूप नहीं बन सकी और मूल रहस्यों गौण नहीं हुए।

अक्षपुरूषोत्तम की उपासना व जीव को ब्रह्मरुप करके परब्रह्म में जोड़ने के मूल उद्देश्य में सहज स्थिति व सिद्धि पू. बापा ने दी, जिससे सभी प्रकार की भूमिकाओं में अखंड शांति व आनंद रहा। ऐसा तुम पांच संतों को कराना है। परन्तु उसमें पूरा ही खुलापन व मनरहित होना जरूरी है, इतना ही नहीं-बल्कि अनिवार्य शर्त है। उसके सरल रास्ते हमनें ढूँढ़े हैं। गुरुकृपा से अब वह सिद्ध होगा। तो सब को बल देते रहना। मूर्ति में ही रहकर काम करते हो जाओ। तो जहाँ जितना जरूरी और योग्य होगा, उतना ही पू. बापा कराते जाऐंगे।

बड़े-बड़े एकांतिकों को भी जो कसरें होगी, वह निकालने पू. बापा ने अथग् परिश्रम किया और ज्ञान गरीबी ही पकड़े रखी व आखिर तक छुपे ही रहे। तो, अब

हमें वह **ज्ञानवारसा** तो जरूर-जरूर प्रेम से और स्वयं खत्म होकर दिया है। वह कितना और कहां तक 1996 से 1977 तक-12 वर्ष में हमने संभाला है, बढ़ाया है, उसका लेखा-जोखा निकालना है।

हम एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते हैं कि देह रहते हुए ही अक्षरधाम का ही सुख सर्व प्रकार से लेता हो जहां भेदभाव नहीं, रागद्वेष ना हो, छोटे-बड़े का भेद ना हो और आंतरिक एकता च दिव्य एकता से जीवन जीने वाला समुदाय यह पू. बापा की योजना थी। उनके संकल्प से वह पूर्ण करनी रही। 1980 तक में वह कर सकें ऐसी प्रभु को प्रार्थना है।

तो अब मन की, बुद्धि की, चित्त व अहम् की सभी गिनतीयाँ सदंतर ही आप पाँच संतों छोड़कर केवल गुरुमुखी ही-साक्षीभाव से और सचेतन-सक्रियता से, सर्व क्रियायोग करते हो जाए-वैसी तीव्र अभीप्सा रखी है और प्रार्थना भी करी है। तो तुम पाँच Rockets अब तैयार हो जाओ व पू. बापा के कार्य की खूब शोभा बढ़ओ.....''

प.पू. काकाजी ने 1977 में लिखे इस पत्र से स्पष्ट पता चलता है कि पू. काकाजी धरती पर सिर्फ प्रभु के संबंध से, प्रभु के बल से ही जीने वाला, रागद्वेष रहित आंतरित एकता से जीने वाला एक दिव्य समाज का प्रगटीकरण 1980 तक करना चाहते थे। उसके बाद 1986 तक वे स्थूल शरीर से रहे और अथाग परिश्रम करते ही रहे। हमारे प्रतिभाव की खूब राह भी देखी और इस 7 मार्च को उन्हें शरीर छोड़े हुए भी 10 वर्ष यानि एक दायका पूरा हो जायेगा। हम अपने भीतर झांके कि पू. काकाजी ने हमसे जो उम्मीदें रखी थी, वह हमने कितनी पूरी की? या आज भी इस निशान की ओर हमारी निगाह है क्या?

आईये, हम सभी इस 3 फरवरी के महामंगलकारी दिन पर कृतनिश्चयी बने और प्रार्थना करें कि हे करूणानिधि काकाजी ! आपने हम सब से जैसी चाहना रखी थी, उस निशान की ओर अब तो हम जागृत बनें औप आपके स्वप्न को तो न कहा जाए परन्तु आपकी योजना को जल्दी से जल्दी साकार करके आपको 'हाश' कर दें.....फलस्वरूप आप हमारी पूर्णाहुति करा देना !

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

496. तीन देह, तीन अवस्था, तीन गुण से पृथक होकर गुणातीत होना तथा ब्रह्मरूप होना और उसकी क्रिया से पृथक रहना। वह तो देह का और अवस्था का गुण है, सो उसे मानना नहीं और उसे झूठा जानना। यह विवेक तो बड़े संत के अलावा और किसी को समझ आयेगा ही नहीं।

प्र-5, 279

470. हमें सत्संग मिला है, वैसा किसी को मिला नहीं। फिलहाल जैसे साधु हैं वैसे पहचाने नहीं गए, हरिभक्त नहीं पहचाने गए, भगवान का स्वरूप जैसा है वैसा समझ नहीं पाए और आज्ञा ठीक नहीं पाली गई, उतनी खोट रहेगी।

प्र-5, 280

471. इस लोक का सुख कैसा है तो सोलह दिन श्राद्ध के और फिर बंदूक की गोलियां-वैसा है।

प्र-5, 281

472. भिखारी जैसे किसी को माँ कहे, बहन कहे, दादी कहे, मौसी कहे- वह सब कुछ दाने इकट्ठे कर लेने के मतलब से है। यूं हमें मन से, सभी से अलिप्त रहना। ऐसा छल करे तो भगवान भजे जाएं।

प्र-5, 282

473. उपासना ही भक्ति है। चाहे कैसे ही बड़े विषय देखें पर उसमें मोहित नहीं हों, ऐसी समझदारी रखना और प्रकृति के अन्दर तक के विषय को विष्ठा जैसे जानना, परन्तु मन से उसमें माल मानना नहीं।

प्र-5, 283

474. बुरानपुर में बहनों के पास दो महिने हमने बातें करी थी, लेकिन उसमें मन लगने नहीं दिया क्योंकि मन हमारा अपना नहीं है, सो उससे अलग रहना।

प्र-5, 284

475. मुक्तानंद स्वामी ने महाराज को पूछा कि- शांति कैसे हो? तब महाराज ने स्वयं के चरित्र कह कर बताए और संकल्प किया कि-हमारा दर्शन करे उसका मोक्ष हो और यदि हमारा दर्शन नहीं हो व हमारे साधु का दर्शन करें उसका मोक्ष हो तथा उनके दर्शन भी न हो तो हमारे हरिभक्त का दर्शन करे- उसके मटके का पानी पीए, उसके घर की रोटी खाए, उसका भी मोक्ष करने का संकल्प किया है। शांति होने का यह उपाय बताया उससे ही होगी, लेकिन और किसी साधन से शांति होती ही नहीं। हाँ, साधना से विघ्न नहीं आयेंगे।

प्र5,287

476. घनश्यामदासजी महाराज के साथ लगातार रहे लेकिन कुछ समझे नहीं और कसर खूब ही रह गई। तब महाराज ने कहा कि तुम्हें अभी नहीं समझ आएगा। आगे ऐसे साधु मिलेंगे, वे समझाएंगे। आज वे सब बातें समझा कर कसर टाली।

प्र5, 289

477. मनुष्भाव-दिव्यभाव एक समझ कर भगवान का निश्चय किया हो, फिर चाहे भगवान स्वयं भी हमें डिगाने प्रयत्न करें तो भी डिगना नहीं-जैसे नित्यानंदस्वामी नहीं डिगे।

प्र5, 290

478. भगवान भजने देह धारी थी, परन्तु गलत संग के पाश लगे। फिर निकालने वाले मिले तब निकले और अभी भी वैसा ही कितनों को है। स्वयं के बल से चलकर तो निकाल नहीं पायेंगे क्योंकि संग का पाश लगेगा ही।

प्र5, 291

व्रतोत्सवसूची

1) दि.	31.1.96 बुधवार	एकादशी, व्रत
2) दि.	3.2.96 शनिवार	ब्र.स्व. प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन व अशोक विहार स्वामिनारायण मंदिर कापाटोत्सव
3) दि.	4.2.96 रविवार	ब्र.स्व. प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन सुबह 8.30 से 12.00 अनिर्देश में मनाएंगे।
4) दि.	11.2.96 रविवार	प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का हीरक
5) दि.	12.2.96 सोमवार	जयंती महोत्सव
6) दि.	13.2.96 मंगलवार	(सांकरदा-गुजरात में मनाएंगे)
7) दि.	15.2.96 गुरुवार	एकादशी, व्रत प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की जयंती
8) दि.	17.2.96 शनिवार	महाशिवरात्रि, व्रत ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का हिन्दी तिथि के मुताबिक अग्निसंस्कार विधि दिन

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'ANIRDESH' Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053